|  |
| --- |
| 14. Februar  |
| **Fest Hl. Cyrill, Mönch und Hl. Methodius, Bischof – Schutzpatrone Europas** |
| Lesung: Apg 13, 46-49; Evangelium: Lk 10,1-9 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 381, 1-3 | Dein Lob, Herr |  |
|  | GL 393, 1-3 | Nun lobet Gott im hohen Thron |  |
|  |  |  |
| Kyrie | GL 155 | Kyrie |
|  | GL 163, 7 | Herr Jesus, du rufst die Menschen |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 167 | Dir Gott im Himmel |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 117, 1.2 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 454 | Geht in alle Welt |
|  | oder Kehrvers: |  |
|  | GL 386 | Laudate omnes gentes |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 8 |
|  | Vers: |  |
|  | *Der Herr hat mich gesandt,* |
|  | *den Armen die Frohe Botschaft zu bringen* |
|  | *und den Gefangenen die Freiheit.* |

|  |  |
| --- | --- |
|  |  |
| Gabenbereitung: | GL 477, 1+2 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 193 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 202 | O du Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 484, 1+4-6 | Dank sei dir, Vater |
|  | GL 481, 1+4+5 | Sonne der Gerechtigkeit |
|  |  |  |
| Schlusslied: | GL 143, 2+3 | Dein Name, Herr |
|  | GL 542, 1+3 | Ihr Freunde Gottes |

|  |
| --- |
|  |